International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 487-488

पद्मश्री सुनील डबास : खिलाड़ी, प्रशिक्षक और खेल प्रोत्साहक

[1] पारस मणी, [2] डॉ. सरिता चौधरी

[1] सोध करता सिंधानिया विश्वविद्यालय राजस्थान भारत।
[2] सहायक प्राध्यापक, आर्य गर्ल्स कॉलेज, अम्बाला कैन्ट, हरियाणा, भारत।

सारांश
भारत में खेलों का विवरण
भारत में खेलों का इतिहास वैदिक युग के समय से देखा जा सकता है। भारत में शारीरिक सभ्यता के पीछे सबसे बड़ी मजबूती धार्मिक न्याय की रही है। अर्थववेद में भी इन्हीं मन्त्रों को परिभाषित किया गया है 'मेरा कर्त्तव्य मेरे दाएं हाथ में तथा जीत की खुशी बाएं हाथ में है।' आदर्श की दृष्टि से देखें तो इस परिभाषा में वही भाव झलकता है जैसा कि परम्परागत ओलम्पिक खेलों से पहले ली जाने वाली शपथ में कहा गया है "फॉर द हॉनर ऑफ माई कंट्री एण्ड दा ग्लोरी ऑफ स्पोर्ट" अर्थात् 'अपने देश के सम्मान तथा खेलों की कीर्ति के लिए।'
भारत में खेले जाने वाले कई खेल जैसे शतरंज, सांप–सीढ़ी, ताश तथा पोलों भारत की ही देन है जिसे बाद में भारत के बाहर दूसरे देशों में भी खेलना प्रारंभ किया तथा उन खेलों को ओर ज्यादा आधुनिक बनाया।
कबड्डी एक सामूहिक खेल है जो प्रमुख रूप से भारत में खेला जाता है। कबड्डी नाम का प्रयोग प्रायः उत्तर भारत में किया जाता है। भारत के साथ पड़ोसी देशों में भी कबड्डी बड़े पैमाने पर खेली जाती है। इस खेल में एक खिलाड़ी विरोधी दल के पाले (क्षेत्र) में **2** 'कबड्डी–कबड्डी' दोहराया जाता है, विरोधी दल के खिलाड़ियों को छूने के प्रयास में तेजी से घूमता है और वापस अपने पाले (क्षेत्र) में आ जाता है। यह सभी एक ही सांस में और विरोधियों की गिरफ्त से बचकर होना चाहिए।

मूल शब्द : खिलाड़ी, वैदिक युग, खेल प्रोत्साहक

प्रस्तावना
सुनील डबास
सुनील डबास का जन्म गांव मोहम्मदपुर माजरा हरियाणा राज्य के झज्जर जिले में हुआ। इनके पिता अतर सिंह फोज में थे, वे कुश्ती करते थे। यही वजह भी थी कि स्कूल स्तर से सुनील का रूझान खेलों की और बढ़ता गया। स्कूली स्तर पर कबड्डी में सुनील ने कई इनाम जीते। आखिर में उन्हें भारतीय कबड्डी टीम का कोच बनाया गया। तब से अब तक वह विभिन्न प्रतिष्ठितम अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं में भारत को आधा दर्जन से अधिक स्वर्ण पदक दिलवा चुकी हैं। अपने पैतृक गांव में स्कूल की शिक्षा के बाद शारीरिक शिक्षा में मास्टर डिग्री महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक से प्राप्त की उसके बाद एम.फिल्. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से और पीएचडी आगरा विश्वविद्यालय से प्राप्त की। सुनील ही उमदा खिलाड़ी, आशावादी प्रशिक्षक व खेल प्रोत्साहक रही है।
वर्ष 2012 में सुनील डबास को द्रोणाचार्य अवार्ड और अर्जुन अवार्ड से नवाजा गया। वर्ष 2014 को पद्म विभूषण अवार्ड दिया गया।

शोध प्रक्रिया
शोधार्थी द्वारा 'साक्षात्कार' व 'प्रश्न सूची' पद्धति का उपयोग किया गया तथा विभिन्न कारकों से सहायता लेकर अन्वेशणात्मक अध्ययन सम्पन्न किया गया। इसमें शोधार्थी सुनील डबास के परिवार के सदस्यों, सहपाठी, प्रशिक्षक, साथी, अध्यापकों से सीधे साक्षात्कार भी किया। शोधार्थी ने 104 प्रश्नावली अलग–अलग लोगों से भरवाई। जिसमें सुनील डबास के अध्यापक, प्रशिक्षक, सहपाठी, परिवार के सदस्यों व साथियों ने सुनील डबास के अलग–अलग पहलूओं पर जानकारी ली।

विश्लेषण
इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सुनील डबास की उपलब्धियों को बताते हुए उनके सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक गुणवत्ता को बताना व उनके खेल कबड्डी को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पदोन्नत करना ही शोधार्थी अपने अध्ययन के माध्यम से खिलाड़ियों व प्रशिक्षकों को खेल के प्रति उत्साहित भी करना चाहता है कि किस तरह की परेशानियों का सामना करते हुए सुनील डबास इस मुकाम तक पहुंच कर द्रोणाचार्य व अर्जुन अवार्ड के साथ–साथ देश का सर्वोच्च अवार्ड पद्मविभूषण भी प्राप्त किया। और अब एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक के रूप में किस प्रकार लगातार आगे बढ़ते हुए खेलों को बढ़ावा दे रही है। सुनील डबास अब खेलों में ही नहीं सामाजिक रूप से भी एक बड़ी हस्ती के रूप में उभर रही है। सुनील के प्रसिद्ध खिलाड़ी, साथियों ने बताया कि सुनील एक दृढ़ निश्चियी, मेहनती व समय की पाबन्ध प्रशिक्षक व खिलाड़ी है। सुनील डबास के अधीन खेलने वाले अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों के भी उनके व्यक्तित्व के बारे में बताया कि सुनील डबास, एक मेहनती, होशियार, मददगार व अच्छे स्वभाव वाली प्रशिक्षक है। इसके अलावा परिवार के सदस्यों व गांव वालों ने बताया कि शुरू के दिनों में सुनील सूट–सलवार में खेलती थी व घर का सारा काम करते हुए खेल व पढ़ाई में भी अव्वल रही।

अभिस्वीकृति
अन्त में शोधार्थी सुनील डबास के परिवार के सदस्यों, उनके साथियों, अध्यापकों, प्रशिक्षकों खिलाड़ियों के साथ–साथ सहपाठियों का धन्यवाद करता है कि उन्होंने शोधार्थी को महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध करवाई।

संदर्भ ग्रन्थ सूची
1. अग्रवाल एच.एस., यादव आर.के., "भारत में शारीरिक शिक्षा का इतिहास", अमित ब्रदर्स पब्लिकेशन्स।

2. अजमेर, डॉ. बैंस जे., गिल जे.एस., बराड वाई.एस., राठी डॉ. निर्मलजीत कौर, "शारीरिक शिक्षा तथा ओलम्कि अभियान", कल्याणी पब्लिशर्ज।
3. शर्मा वी.के., "स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा", लक्ष्मी पब्लिशिंग हाऊस।
4. कमलेश एम.एल., संग्राल एम.एस., "शारीरिक शिक्षा के सिद्धान्त तथा इतिहास", विजेता पब्लिकेशनज, लुधियाना।